रात्रिक्लास 4.4.68 ओमशान्ति

आज गुरूवार था? (जी हां) गुरू भी होते हैं, सद्गुरू भी होते हैं। तो गुरूवार भी है, तो सतगुरूवार भी है। सत्गुरू वृक्षपति है और बच्चों की बृहस्पत की दशा है। इतना ज़रूर है पढ़ाई में फ़र्क़ पड़ता है। जो यहां आते हैं उनको खुशी भी होती है हम बेहद के बाप पास जाते हैं। किसलिए जाते हैं? बाबा हमको शान्तिधाम ले जावेंगे। फिर सुखधाम जावेंगे। यह भी तुम बच्चों की ही बुद्धि में है। कितने ढेर मनुष्य हैं। भक्तिमार्ग की कितनी सेना है। बाप से जो वर्सा मिला वह अभी पूरा कर भक्तिमार्ग में चकनाचूर हो पड़े हैं। ज्ञान से सद्गति पाये हैं वह बिचारे भूल गये हैं। ज्ञान से तुम समझते हो यह भी पार्ट बजाते रहते हैं। सुख का भी पार्ट बजाया। दुःख का भी पार्ट बजाया। ऑलरॉउण्ड भी सभी को नहीं कहेंगे। यह भी आगे चल पता पड़ जावेगा ऑलराउण्ड कितना है। सतयुग में जो आदमशुमारी होगी, आदि में तो तुम भी हो। यह भी है; परन्तु फ़र्क़ बहुत है। आदमशुमारी पहले–2 जो स्वर्ग में होगी समझा जाता है 9 लाख होगी। यह भी आगे चल का(र) बच्चे समझते तो ज़रूर जावेंगे। ड्रामा में जो नूँध है वह बताते जाते हैं। तुम समझते जाते हो। पहले से नहीं बता सकते हैं। भक्तिमार्ग वालों को कितनी खु(शी) होती है और तुम बच्चे जब ज्ञान सुनाते हो तो वह खुशी उनको हल्की हो जाती है। तराजू में वज़न करेंगे तो तुम्हारा पलड़ा भारी हो जावेगा। तुम निहोरी सॉल्ड हो जावेंगे। वह खोखले। खाली दुनियां और भरतू दुनियां होती है ना। देखो दोनों में कितना फ़र्क है। तुम अच्छी रीत जानते हो। यह है ही खाली दुनियां। कुछ है नहीं जैसे। मनुष्यों के पास तो बहुत डॉलर्स, पाऊण्ड, मिलटी मिलीयन्स हैं; परन्तु तुम जानते हो यह सभी खाली हैं। ऐसे भी नहीं उनका धन तेरे पास आता हैं, नहीं। तुमको तो नई दुनियां सभी कुछ नया ही मिलेगा। सभी चीज़े नई ही होंगी।

4.4.68 4

पुराने चांदी, सोना आखिर में भी नहीं आवेंगे। इतना ऊँच पढ़ाई तुम पढ़ रहे हो तो पढ़ाई पर ध्यान बहुत देना चाहिए। वृद्ध माताएं भी बहुत ऊँच पद पा सकती हैं। बाप जिसकी महिमा अपर(म)अपार है कितना प्रेम से बैठ पढ़ाते हैं। बहुत प्यारे बच्चे हैं। यह भी कहना पड़ता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्यारे बच्चे। हर एक का पुरुषार्थ अपना है। बाप है ही ग़रीब निवाज़। वह फिर कितने साहुकार बनते हैं। अभी भल पदमपति मनुष्य हैं; परन्तु स्थाई नहीं। तुम जानते हो बाकी कितना समय यह सभी होंगे। तो नोट, चांदी आदि सभी कुछ ख़त्म हो जावेंगे, कुछ भी चलेंगे नहीं। आग में सोना आदि सभी गल जाते हैं। सराफी के दुकान को आग लग जाती है तो सोना काला बूरा हो जाता है। यह तो आग बहुत ही कड़ी है। दिल होती है पुरानी दुनियां कैसे ख़त्म होती है हमारे लिए। इसको देखें बाबा कैसे लायक बना कर पुरानी दुनियां खलास करते हैं। ज्यों का त्यों स्वर्ग का भी साक्षात्कार होगा। अभी हुआ नहीं है। अभी समय पड़ा हुआ है। पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए जो देखने लायक भी बने। अभी बच्चे तो अपन को भाई–2 समझते होंगे। बाप हम भाईयों को कैसे बैठ पढ़ाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। यह कोई अमृत पीने की चीज़ नहीं है। तुम पढ़ते हो जिससे यह ऊँच मर्तबा मिलता है। तुम संस्कार ले जाते हो नई दुनियां के लिए। तुम जानते हो हम संस्कार ले जाते हैं नई दुनिया में बहुत फ़र्क है; इसलिए तुम बच्चों को आंतरिक खुशी बहुत रहनी चाहिए। बच्चे पढ़ते हैं तो दिल में खुशी होगी ना। हम यह पढ़ते हैं। तुम बच्चो को भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार खुशी की महसूसता होती है। जो सर्विस करते हैं उन्हों को बाप हिम्मत देते रहते हैं। हर प्रकार से मदद भी बच्चों को देते रहते हैं। बाप मदद दे रहा है उसी मदद सो फिर बाप के मददगार बनना है। यह भी समझते हो बाकी थोड़ा समय है। फिर दुःख का नाम–निशान न रहेगा। आयु भी बड़ी होगी। तुम्हारे पास काल आ नहीं सकता; क्योंकि अमरपुरी है। वहां काल नहीं खाता।

ए(क) शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। यह पुरानी दुनियां का पुराना शरीर है। बाप की याद में पुरानी (ख)ल को उतार घर चले जावेंगे। फिर नई दुनियां में आकर नई खल लेंगे। अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। बेहद का बाप टीचर बन हमको पढ़ाते हैं। बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। सतयुग का पवित्र राजा बनाता हूं। एमऑब्जेक्ट भी है। बैज सदैव ही पड़ा रहे। डरो मत कि कोई ठग न लेवे। बच्चों को तो बहुत ख़बरदार भी रहना चाहिए । उधार पर पैसा तो देना न है किसको। न किसी से तुम उधार लेते ही हो। यह सभी छोड़ देना है। दुनियां में ठगी तो बहुत है। सयानी बुद्धि चाहिए हर प्रकार से। तुम्हारे जैसा शरूढ़ बुद्धि कोई है नहीं। कितना सारा ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है। गफ़लत करने से चीज़ गवां देंगे। पेटी गवां देंगे। ज्ञानकाल में गफ़लत नहीं होती है। बच्चे आते हैं तो सामान का वज़न आदि ठीक कराओ। इज्ज़त न जाये। तुम्हारी इज्ज़त तो बहुत ऊँची है। उनकी इज्ज़त तो सेकण्ड में काल आकर उतार सकती है। तुम्हारी इज्ज़त थोड़े ही कोई उतार सकते। तो दिल से पूछना चाहिए हम इतने खुशी में हैं? बाप बूढ़ियों को भी, तो जवानों को भी पढ़ाते हैं। सिर्फ ममत्व निकाल देना है। इन आँखों से देखने से वाली चीज़ में ममत्व न रखना है। बुद्धि शान्तिधाम–सुखधाम तरफ हो। अपना घर, अपनी राजाई। तुम खुद ही अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो । हिंसा का नाम निशान नहीं। बच्चे समझते हैं बाबा कितना दूर से आते हैं। कल्याणकारी बाप कल्याणकारी समय पर आते हैं। कल्याणकारी है ही संगमयुग। सतयुग की स्थापना बाप ही करते हैं। 84 जन्म ले हम नीचे आते हैं। बाप और बच्चों का मेला बहुत वैल्युएबल है। बाप की भी दिल होती है जावें; परन्तु कोई कारण है ज़रूर। बच्चों में सर्विस शौक होना (चाि)हए। ऐसे–2 बच्चों को देख दिल खुशी होती है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट नमस्ते।